International Journal of Financial Management and Economics 2022; 5(1): 130-133

International Journal of Financial Management and Economics

P-ISSN: 2617-9210
E-ISSN: 2617-9229
IJFME 2022; 5(1): 130-133
Received: 10-01-2022
Accepted: 15-02-2022

डा0 संगीता सिंघल
एसोसिएट प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग, सनातन धर्म महाविद्यालय मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
डा0 संगीता सिंघल
एसोसिएट प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग, सनातन धर्म महाविद्यालय मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश, भारत

भारत में बढता शहरीकरण, समस्याऐं एवं संभावनाए

डा0 संगीता सिंघल

DOI: https://doi.org/10.33545/26179210.2022.v5.i1.137

प्रस्तावना

शहरीकरण विकास प्रक्रिया का एक प्रमुख अंग है। नगरों का विकास औद्योगिकीकरण का सूचक है। इसी कारण, शहरीकरण एवं आर्थिक विकास में घनिष्ठ सम्बंध है। स्वंतंत्रता के पश्चात देश में औद्योगिकीकरण का विकास तीव्रता से हुआ तथा इसका सीधा प्रभाव नगरीकरण/शहरीकरण पर पडा। जनानिकीय दृष्टि से इसे आर्थिक विकास का सूचक माना जाता है। यह एक सर्वमान्य सत्य है, कि आर्थिक विकास का संबंध नगरीकरण के विकास के साथ होता है। अतः शहरीकरण, विकास प्रक्रिया का एक हिस्सा है। शहरीकरण का अभिप्राय, उस प्रक्रिया से है जिसमें जनसंख्या का एक वर्ग शहरी जीवन को अपनाता है चाहे वह ग्रामीण क्षेत्र में रहता हो। शहरी क्षेत्रों के भौतिक विस्तार, जैसे क्षेत्रफल, जनसंख्या जैसे कारकों का विस्तार शहरीकरण कहलाता है। शहरीकरण भारत सहित पूरी दुनिया में होने वाला एक वैश्विक परिवर्तन है। संयुक्त राष्ट्र संघ के अनुसार ग्रामीण क्षेत्रों के लोगो का शहरों में जाकर बसना और वहां काम करना भी शहरीकरण है। प्रो0 थोम्पसन के अनुसार, नगरीकरण उसे कहते है जिसमें वे समाज, जो कि कृषि से सम्बध रखते है, वे उस समाज में आकर मिल जाते है जिनकी क्रियाऐं व्यापार प्रशासन, निर्माण उद्योग तथा सम्बन्धित कार्यो से सम्बन्धित होती है। इस प्रकार किसी क्षेत्र या विश्व की कुल आबादी में नगरीय आबादी के भांगो में वृद्धि को नवीनीकरण कहते है जिसका प्रयोग एक विशिष्ट जीवन के ढंग को पहचानने के लिए करते है जो अदभुत रूप से नगर विकास से सम्बंधित है।

भारत में नगरीकरण/शहरीकरण की प्रवृत्ति

भारत एक कृषि प्रधान देश है यहां की लगभग 68 प्रतिशत जनसंख्या कृषि पर निर्भर करती है। इसलिए भारत को गांवो का देश कहा जाता है। तालिका 1.0 में भारत में विभिनन जनसंख्या वर्षो में नगरीय जनसंख्या तथा उसकी दशकीय भिन्नता, नगरों की संख्या, कुल जनसंख्या से नगरीय जनसंख्या के प्रतिशत (नगरीकरण स्तर) को प्रदर्शित किया गया, जो निम्न प्रकार है–

तालिका संख्या 1: भारत में नगरीकरण की प्रवृत्ति (1901–2001)

जनगणना वर्ष	नगरी की संख्या	कुल नगरीय जनसंख्या (दस लाख में)	दशकीय भिन्नता प्रतिशत में	कुल जनसंख्या से ग्रामीण जनसंख्याका प्रतिशत	कुल जनसंख्या से नगरी जनसंख्या का प्रतिशत
1901	1627	25ण्85	.	89ण्2	10ण्84
1911	1815	25ण्94	0ण्35	89ण्7	10ण्29
1921	1949	28ण्09	8ण्27	88ण्8	11ण्17
1931	2049	33ण्40	19ण्12	88ण्0	11ण्99
1941	2250	44ण्15	31ण्97	86ण्1	13ण्86
1951	2843	62ण्44	41ण्43	82ण्7	17ण्29
1961	2364	78ण्94	26ण्41	82ण्0	17ण्97
1971	2590	109ण्11	38ण्23	80ण्1	19ण्91
1981	3378	159ण्46	46ण्14	76ण्7	23ण्31
1991	3768	217ण्61	36ण्47	74ण्3	26ण्13
2001	5161	285ण्30	31ण्11	72ण्2	27ण्80
2011	7953	3771ण्0	31ण्8	68ण्8	31ण्20

Source: Census of India 2001, 2011

तालिका से स्पष्ट है कि 1961 की जनगणना के अनुसार यहां 82 प्रतिशत गांवों में केवल 18 प्रतिशत जनसंख्या नगरों में निवास करती थी। तालिका से स्पष्ट है कि वर्ष 1901 में भारत में केवल 11: जनसंख्या नगरीय थी जो वर्ष 1931 में बढकर 12ण्0:ए 1941 में 13ण्9: , 1951 में 17ण्3: हो गयी।

वर्ष 1961 के बाद देश में नगरीकरण की प्रवृत्ति में तेजी आयी और वर्ष 2001 में देश में नगरीय जनसंख्या 27०8ः हो गयी। भारत की 2011 की जनगणना के अनुसार नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत 37.7 करोड (31०16ः) है इस तरह वर्ष 1901–2011 के दौरान भारत की शहरी जनसंख्या में 20ः बिन्दुओं से अधिक की वृद्धि हुई है। यदि भारत में विभिन्न राज्यों में नगरीकरण का स्तर देखा जाये तो, वह निम्न तालिका 1.1 से स्पष्ट है।

तालिका न0. 1.1: कुल जनसंख्या में नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत

क्र.स.	राज्य/केन्द्र शासिक क्षेत्र	कुल जनसंख्या में नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत		
		1981	1991	2001
1	दिल्ली	92.84	89.93	93.01
2	चंडीगढ़	93.60	89.69	89.78
3	पांडिचेरी	92.32	64.00	66.57
4	गोआ	32.03	41.01	49.50
5	मिजोरम	25.17	46.80	49.50
6	लक्षद्वीप	46.31	56.31	44.47
7	तमिलनाडू	32.98	34.15	43.86
8	महाराष्ट्र	35.03	38.69	42.40
9	गुजरात	31.08	34.40	37.35
10	दमन एवं दिव	36.15	48.80	36.26
11	कर्नाटक	28.91	30.92	33.98
12	पंजाब	27.72	29.55	33.95
13	अंडमान व निकोबार	26.36	26.71	32.67
14	हरियाणा	21.96	24.63	29.00
15	पश्चिम बंगाल	24.49	27.48	28.02
16	आंध्र प्रदेश	23.25	26.89	27.08
17	मध्य प्रदेश	20.31	23.18	26.67
18	केरल	18.78	26.39	25.97
19	उत्तरांचल	-	-	25.97
20	जम्मू एवं कश्मीर	-	-	24.88
21	राजस्थान	20.93	22.88	23.38
22	दादर एवं नागर हवेली	6.67	0.847	22.89
23	झारखण्ड	-	-	22.25
24	उत्तर प्रदेश	18.01	19.84	20.78
25	अरूणांचल प्रदेश	6.32	12.80	20.41
26	छत्तीसगढ	-	-	20.08
27	मेघालय	18.03	18.60	19.63
28	नागालैण्ड	15.54	17.21	17.71
29	त्रिपुरा	10.98	15.30	17.02
30	उड़ीसा	11.82	13.58	14.97
31	असम	-	11.08	12.72
32	सिक्किम	16.32	09.10	11.10
33	बिहार	12.46	13.14	10.47
34	हिमांचल प्रदेश	07.70	08.69	09.97
	भारत	23.31	26.13	27.78

Source: Census of India 1991, 2001

तालिका से स्पष्ट है कि भारत में नगरो की जनसंख्या बढ रही है इसका एकमात्र कारण देश में उद्योग धंधो और व्यापार का विकास होना है। भारत में नगरीकरण की तुलना यदि विश्व के विकसित देशों के साथ की जाए तो इससे पता चलता है कि भारत उच्च आय वाले देशों से अभी बहुत पीछे है। 1990 में कुल जनसंख्या में नगरीय जनसंख्या का अनुपात यू0एस0ए0 में 75 प्रतिशत, जापान में 77 प्रतिशत और यू0के0 में 89 प्रतिशत था। इसकी तुलना में 2011 में भारत का 31.2 प्रतिशत अनुपात बहुत ही नीचा माना जा सकता है।

2011 की जनगणना के आंकडो के अनुसार, देश की शहरी आबादी में बढोतरी ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में अधिक रही है। नेशनल कमिशन ऑन पॉपुलेशन (एन.सी.पी.) का अनुमान है कि अगले 15 वर्षो में यानि 2036 तक 38.6 प्रतिशत भारतीय शहरी इलाकों में रहेंगे, संयुक्त राष्ट्र (यू0एन0) ने भी कहा कि 2018 से 2050 के बीच भारत में शहरी आबादी 46.1 करोड से बढकर 87. 7 करोड यानि दोगुनी हो जायेगी। अतः भविष्य के अनुमानों से स्पष्ट है भारत लगातार शहरीकरण की तरफ बढ रहा है।

राज्यों की स्थिति

भारत की 75 प्रतिशत से अधिक शहरी आबादी, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, तमिलनाडू, पश्चिम बंगाल, आंध्र प्रदेश, गुजरात, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, राजस्थान और केरल जैसे 10 राज्यों में है। महाराष्ट्र

50.8 मिलियन व्यक्तियों (देश की कुल आबादी को 13.5 प्रतिशत) के साथ सबसे आगे है। उत्तर प्रदेश में लगभग 44.4 मिलियन आबादी शहरी है। इसके बाद तमिलनाडू का स्थान है।

उच्च स्कोर वाले राज्य

62.2 प्रतिशत शहरी आबादी के साथ गोवा सबसे अधिक शहरीकृत राज्य है। तमिलनाडू, केरल, महाराष्ट्र और गुजरात ने 40 प्रतिशत अधिक शहरीकरण की स्थिति प्राप्त कर ली है। उत्तर पूर्व राज्यों में मिजोरम 51.5 प्रतिशत शहरी आबादी के साथ सबसे अधिक शहरीकृत है। बिहार, ओडिशा, असम और उत्तर प्रदेश में शहरीकरण का स्तर राष्ट्रीय औसत से कम है। दिल्ली और चंडीगढ में क्रमशः 97.5 प्रतिशत और 97.25 प्रतिशत शहरी आबादी है।

बढते शहरीकरण का कारण

शहरों में जनसंख्या में वृद्धि मुख्यतः तीन कारणों से है :–

1. असीमित संख्या में उच्चतर जन्मदर
2. मृत्यु दर में कमी।
3. गांवो से अथवा छोटे कस्बा से शहरों की तरफ विस्थापन।

विस्थापन ''खिंचाव'' एवं ''दबाव'' दोनो कारणों से होता है, शहरों के खिचांव कारकों में मुख्यतः संगठित और असंगठित दोनो क्षेत्रों में अधिक नये और बेहतर आजीविका अवसर, बच्चों की स्कूली और उच्चतर शिक्षा दोनो के लिए अधिक और बेहतर अवसर होना, बेहतर आवासीय सुविधाएं, अच्छी सांस्कृतिक और मनोरंजन, सुविधाए, अधिक सरकारी कार्यालय और सार्वजनिक उपयोगिताऐं, निजी क्षेत्र का विकास, बेहतर परिवहन और संचार सुविधाऐं आदि शामिल है।

दूसरी तरफ गांवों में दबाव के कारण है : आजीविका के अवसरो का अभाव (कृषि में रोजगार के अवसरों की कमी अथवा प्रच्छन्न बेरोजगारी), शैक्षणिक और स्वास्थ्य सुविधाओं का अभाव, परिवहन और संचार सुविधाओं का अभाव, अनावश्यक बंधन और रूढिवादी रीति रिवाज, मनोरंजन सुविधाओं का अभाव तथा खराब स्वास्थ्य सुविधाऐं इत्यादि शहरीकरण के सम्बन्धित समस्याऐं।

अत्याधिक जनसंख्या दबाव

ग्रामीण शहरी प्रवास शहरीकरण की गति को तेज करता है, दूसरी ओर यह मौजूदा सार्वजनिक संसाधनो पर अत्याधिक जनसंख्या दबाव पैदा करता है। भारत के अधिकांश शहर अत्याधिक जनसंख्या दबाव के शिकार है। जिसके कारण शहर, मलिन बस्तियों, अपराध, बेरोजगारी, शहरी गरीबी, प्रदूषण तथा अन्य कई विकृत सामाजिक गतिविधियों जैसी समस्याओं से ग्रस्त हो जाते है।

आवास और मलिन बस्तियों की समस्या

शहरी जनसंख्या में हो रही वृद्धि ने अनेक समस्याओं में से आवास की समस्या अधिक चिंताजनक है। शहरी आबादी का एक बडा हिस्सा गरीबी की स्थित में और अत्याधिक भीडभाड वाले स्थानों में रहता है। भारत में आधे से अधिक शहरी परिवार एक कमरे में रहते है जिसमें प्रति कमरा औसतन 4.4 व्यक्ति रहते है। लगभग 65 प्रतिशत भारतीय शहरों के बाहरी इलाकों में झुग्गियों में रहते है जहां लोग एक दूसरे से सटे छोटे छोटे घरों में रहते है। देश में लगभग 13.7 मिलियन झुग्गी झोपडियां 65.49 मिलियन लोगो को आश्रय देती है।

पारिवारिक विघटनः–शहरीकरण के परिणामस्वरूप बडे परिवार छोटे परिवारों में विभक्त हो गए है इसके अतिरिक्त परिवारों में विवाह विच्छेद, वृद्धों के साथ दुर्व्यवहार की घटनाओं आदि में वृद्धि हुई है।

अनियोजित विकास :–एक विकसित शहर के निर्माण मॉडल की तुलना में अनियोजित विकास के कारण शहरों में अमीर व गरीब के बीच प्रचलित दंवद्ध मजबूत होता है।

सामाजिक सुरक्षा का अभाव–ग्रामीण क्षेत्रों से नगरों में आने वाले लोगो के पास किसी भी प्रकार की सामाजिक सुरक्षा का अभाव होता है।

पर्यावरण समस्या –शहरीकरण में जनसंख्या के लगातार बढते रहने एवं औद्योगिकरण के फलस्वरूप पर्यावरण प्रदूषण तथा अवनयन की नई समस्याऐं उत्पन्न हो गई है। महानगरों और शहरों में प्रदूषण का मुख्य कारण, वाहनों एवं औद्योगिक संस्थानों द्वारा निकला विषैला रसायन है।

जनांकिकीय असन्तुलन की समस्या –भारत में पश्चिमी देशों की तुलना में शहर प्रवास की प्रवृत्ति पुरूषों में ज्यादा है जिसके कारण ग्रामीण क्षेत्रों में उत्पादक पुरूष जनसंख्या में कमी आ रही है।

शहरीकरण का महत्व –

विश्व बैंक के आंकडो के अनुसार दुनिया 54 प्रतिशत से अधिक आबादी अब शहरी क्षेत्रों में निवास करती है। ये आबादी वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद में 80 प्रतिशत योगदान करती है और दो तिहाई वैश्विक ऊर्जा का उपभोग करती है। शहरीकरणके कारण आर्थिक गतिविधियों को बढावा मिलता है। शहरीकरण और शिक्षा के विकास के कारण जाति प्रथा जैसी व्यवस्थाएं अब ध्वस्त होती जा रही है।

शहरी जीवन में साक्षरता और शिक्षा का उच्च स्तर बेहतर स्वास्थ्य, लंबी जीवन प्रत्याशा, सामाजिक सेवाओं तक अधिक पहुंच एवं सांस्कृतिक एवं राजनीतिक भागीदारी के अधिक अवसर प्राप्त हो रहे है। शहरीकरण की प्रक्रिया ने महिलाओं की सामाजिक, शैक्षिक, आर्थिक और राजनीतिक परिस्थितियों में व्यापक बदलाव किया है। महिलाओं की परिस्थिति, ग्रामीण क्षेत्र की तुलना में शहरी क्षेत्रों में अधिक ऊंची है।

शहरीकरण की समस्याओं से निपटने हेतु सरकारी प्रयास

भारत में शहरीकरण तेजी से बढ रहा है, देश विकास के पथ पर अग्रसर है और अधिक से अधिक लोग आधुनिक जीवन जीना चाहते है। बेहतर शिक्षा, अच्छा जीवन और अच्छे रोजगार के अवसर प्राप्त करना चाहते है। शहरीकरण के सकारात्मक नतीजों के साथ नकारात्मक नतीजों पर भी विचार करना आवश्यक हो गया है। पूर्व राष्ट्रपति ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम द्वारा गावों में शहरी सुविधाओं के विस्तार के लिए पूरा *;च्न्त्।द्ध* नामक कार्यक्रम की शुरूआत की गई थी। इसके अन्तर्गत गांवों में उच्च शिक्षा हेतु डिग्री कॉलेज, अस्पताल, टेलीफोन एक्सचेज इत्यादिक का विकास किया गया। सरकार द्वारा शहरों के ठीक प्रकार से नियोजन के लिए स्मार्ट सिटी मिशन की अवधारणों को अपनाया गया। केन्द्र सरकार ने मेट्रो, बस, रैपिड, ट्रांजिट जैसे बडे सार्वजनिक परिवहन गलियारों के पास, बसने को बढाना देने के लिए एक नीति तैयार की है जिसका उद्देश्य शहरीकरण की चुनौतियों का निदान करना है।

सरकार द्वारा गांवों में आधारित संरचना के विकास व शहरीकरण की समस्याओं के निदान हेतु विभिन्न कार्यक्रम व योजनाऐं चलाई जा रही है जैसे स्मार्ट सिटी, अमृत मिशन, स्वच्छ भारत मिशन, शहरी, हृदय, प्रधानमंत्री आवास योजना, प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना, आत्मनिर्भर भारत अभियान इत्यादि कार्यक्रम बडे पैमाने

पर चलाये जा रहे है।

स्मार्ट सिटी योजना :– इसके तहत 100 शहरो का चयन किया गया है इसके विकास पर 2,01,981 करोड रूपये खर्च का अनुमान है। इसका उद्देश्य उन शहरों को प्रोत्साहित करना है जो अवसंरचना मुहैया कराने के साथ ही नागरिकों को बेहतर जीवन व स्वच्छ वातावरण प्रदान करते है।

अमृत

अटल मिशन फॉर रीजुविनिशन एण्ड अर्बन ट्रांसफॉर्मेशन नामक कार्यक्रम सभी नागरिकों को जलापूर्ति, सीवेज, शहरी परिवहन, पार्क समेत आधारभूत नागरिक सुविधाऐं मुहैया कराने व इन्हें बेहतर बनाने के लिए शुरू की गयी है। अमृत योजना पर पांच वर्षो के दौरान 50,000 करोड रूपये खर्च किये जायेगें।

स्वच्छ भारत अभियान

इस अभियान के तहत 2019 तक 66.42 लाख घरेलू शौचालय, 2. 52 लाख सामुदायिक शौचालय, 2.56 लाख सार्वजनिक शौचालय बनाने और ठोस कचरा प्रबन्धन समेत अन्य कई उपायों के साथ शहरी इलाकों को स्वच्छ बनाने का लक्ष्य रखा गया है।

हृदय

हेरिटेज सिटी डेवेलपमेन्ट एण्ड अग्मेटेशन नामक इस योजना को ऐतिहासिक महत्व के शहरों यानि हेरिटेज सिटी को संरक्षित करने और पुर्नजीवित करने के उद्देश्य से शुरू की गयी। इस योजना के तहत मार्च 2017 तक 500 करोड रूपये की लागत से 12 चिहिन्त शहरों का पुनरूद्वार किया जा चुका है।

प्रधानमंत्री आवास योजना–इस योजना के माध्यम से सरकार का उद्देश्य दो मिलियन गैर झोपडपट्टी शहरी गरीब परिवारों को 2022 तक आवास मुहैया कराना है।

निष्कर्ष

बीसवी शताब्दी में विकासशील देशों के नगरों में जनसंख्या अति तीव्रगति से बढ़ी है, किन्तु नगरों में जनसंख्या वृद्धि के अनुपात में नागरिक सुविधाओं (आवास, रोजगार, विद्युत व जल आपूर्ति, स्वास्थ्य, सफाई, परिवहन, अन्य जनोपयोगी सुविधाओं) में बढोतरी नही हो पायी है, जिसके कारण नगरवासियों के जीवन स्तर में गिरावट आ रही है। नगरों में भीड़–भाड, गंदगी, बीमारी, बेरोजगारी तथा अनेक पर्यावरणीय समस्याएं उत्पन्न हो रही है। नगरीय समस्याओं का मूल कारण नगरों में जनसंख्या का अवश्यकता से अधिक संकेन्द्रण तथा नगरों का अनियोजित विस्तार व विकास है। वर्तमान समय में नगरों में शान्ति, सुरक्षा स्वास्थ्य तथा सांस्कृतिक मूल्यों का पतन होने लगा है।

बढता शहरीकरण, आज वैश्विक स्तर की समस्या है। वैश्वीकरण के साथ ही जीवन यापन के स्रोत्र एवं स्वरूपों में भारी परिवर्तन आया है। यह स्थिति ग्रामीण आबादी को शहर को और पलायन हेतु विवश करती है। यह सत्य है कि शहरीकरण के विस्तार को रोकना संभव नही है लेकिन गांव में शहरों जैसी आधरित सुविधाओं का विकास कर ग्रामीण जनसंख्या का शहरों की ओर पलायन पर रोक लगाने का प्रयास किया जा सकता है। ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार पैदा करने के साथ साथ पलायन को कम करने के लिए ग्रामीण कृषि अर्थव्यवस्था का विविधिकरण (Diversification) करने की जरूरत है।

यह सुनिश्चित करने के लिए, कि शहरीकरण का फायदा सभी को मिले, शहरी गरीबो पर ज्यादा फोकस करने की जरूरत है। इसके अलावा शहरों में वंचित लोगो के लिए मकान, शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और स्वच्छ पर्यावरण मुहैया कराना बेहद जरूरी है। इसके लिए बुनियादी ढांचे तक सभी की पहुॅच को आसान बनाना होगा। आज शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच सम्बन्धों का मजबूत करते हुए, उनके मौजूदा आर्थिक, समाजिक और पर्यावरणीय सम्बंधो पर ध्यान देकर शहरी एवं ग्रामीण दोनो की निवासियों के जीवन को बेहतर बनाने के लिए एकीकृत नीतियों पर अमल करने की आवश्यकता है। तभी वास्तविक रूप से देश के लिए, बढता शहरीकरण एक प्रच्छन्न वरदान साबित हो सकता है।

संदर्भ

1. डा0 जे0 पी0 मिश्रा ''जनांकिकी'' पृष्ठ सं0 479
2. डा0 रंजना एस जैन, शशी के जैन '''जनसंख्या अध्ययन''
3. मामोरिया एवं सिसौदिया ''भूगोल'' पृष्ठ सं0 340 से 344
4. दत्त एवं सुन्दरम ''भारतीय अर्थव्यवस्था'' पृष्ठ सं0 33–34
5. https:/www.drishtiias.com
6. https:/www.prabhatkhabar.com
7. https://rojgarsamachar.gov.in